रात्रि क्लास 18-10-68 ओमशान्ति विश्व की बादशाही का श्रृंगार याद है?

शिव बाबा की याद में बैठे हो और स्वर्ग की बादशाही याद है? क्योंकि स्कूल में जब आते हैं तो अपने सब्जेक्ट को और टीचर की याद रहती है। बच्चे भी जो आते हैं तो यहां बैठ बाप को जितना याद करेंगे विकर्म विनाश होंगे और बच्चों को खुशी होगी। इनको कहा जाता है महामंत्र। इनको ही मन्मनाभव मद्याजीभव कहते हैं। गीता ही है। डायरेक्ट बाप आकर बच्चों को पढ़ाते हैं। इसलिये बच्चों को पदमापदमभाग्यशाली लकी सितारे कहा जाता है। खुशी का पारा बच्चों को चढ़ा रहता है। उठते-बैठते कहां भी कोई काम करते बाप को याद कर सकते हो। याद से ही विकर्म विनाश होंगे। सतोप्रधान बनने लिये जरूर पुरुषार्थ करना पड़े। मनुष्य तो घोर-अंधियारे में है। तुम बच्चों को बाप ने समझाया है। कल्प2 ऐसे ही होता है। अनेकानेक गाया गया है। अभी जो भी एक्टिविटी होंगी वह फिर कल्प बाद होंगी। तुम्हारी संगम युग की सुहावनी यात्रा है चढ़ने की। उन्हों की यात्रायें हैं गिरने की। माया विघ्न भी इस यात्रा में ही डालती है। बाप जिससे विश्व स्वर्ग की बादशाही मिलती है उनको पूरी रीति याद करना है। बच्चियां अभ्यास करी कराकर फिर बाप पास ले आती है। यहां बाप से डायरेक्ट सुनने सिखने होने विश्राम पाने आते हो। फिर भी माया भूला देती है। माया छोड़ती कहां भी नहीं। करके बाहर में जास्ती तंग करती है यहां कम करती है। साहुकारों के लिये तो यहां ही स्वर्ग है। म्युजियम आदि में भल बड़े2 आदमी आते हैं परन्तु उनकी तकदीर में नहीं है। सिर्फ राय निकालेंगे। यह गरीबों को मिलना चाहिए। गरीब पर उन्हों को तरसपड़ता है। बाप भी कहते हैं गरीब ही साहुकार बनते हैं। भारत गरीब खण्ड है फिर इन्हों को ही साहुकार बनाते हैं। भारत ही अविनाशी खण्ड है ना। बाप आबू में ही आते हैं। भल जन्म तो और कहां लेते हैं। फिर यहां तुम बच्चों को ज्ञान मिल रहा है जिससे ही सर्व की सदगति होती है। अम्बा भी यहां है। शिव बाबा भी यहां ही है। दिलवाला मंदिर खास इस समय का ही यादगार है। ऊपर में स्वर्ग बना हुआ है। बनाने वाले तो भक्त लोग थे ना। देवताओं को ऊपर में दिखाया है। नीचे तपस्या हो रही है। यहां भी बहुत अच्छा म्युजियम खोलना पड़ेगा ना। अभी टाईम पड़ा है। बच्चे दिल में समझते होंगे माया बाप को भूला देती है। ऐसा कब सुना बच्चा कहते हैं हमको माया बाप की याद भूलाती है। पुरुषोत्तम संगम पर ही माया से तुम्हारी लड़ाई है। माया अलग है। सम्पत्ति अलग है। माया 5 विकार है। भक्ति मार्ग में माया की युध नहीं होती। विघन नहीं पड़ते। यहां ज्ञान-मार्ग में आने से लड़ाई का सवाल क्यों उठता है। बच्चे फील करते हैं बराबर हम बाप को याद करते हैं माया भूला देती है। कब हरा भी देती है। सबसे जास्ती हराना है विकार में जाना। बच्चे जानते हैं पावन दुनिया थी। कलियुग को पतित दुनिया कहेंगे। गाते भी हैं पतित पावन आओ। परन्तु हम पतित हैं यह फीलिंग नहीं आती है। साधु सन्त आदि सभी पतित हैं तब तो जाते हैं ना। तो ऐसी2 पायन्ट्स धारण कर समझाना चाहिए। पतित-पावन तो बाप ही है। पानी कैसे पावन बनावेंगे। पानी तो जहां तहां है। है तो बरसात का पानी वह कैसे पावन बनावेंगी। सर्विस तो बच्चों के लिये ढेर हैं। फुर्सत तो बहुत ही है। ऐसे2 सर्विस कर बहुतों का कल्याण कर सकते हो। पतित-पावन बाप को ही बुलाते हैं। नदी को बुलाया जाता है क्या। तुम बच्चे बहुत सेवा कर सकते हो। शिव बाबा से बेहद का वरसा मिलेगा। भक्ति मार्ग में कब कोई ऐसे बता न सके जैसे तुम बताते हो शिव बाबा को याद करो तो स्वर्ग का वरसा मिलेगा। चित्र तो है तुम्हारे पास। ट्रेन में बैज सभी को पड़ी हुई थी? आज जो पार्टी है आई है सभी को बैज पड़ा हुआ था? ब्राह्मण नहीं पहनती है तो समझेंगे देह-अभिमान है। बैज पर तो अनेकों की सर्विस कर सकते हैं। तुम बच्चे बहुत कल्याणकारी हो। कुछ न कुछ ईशारा देना है बाप का परिचय देना है। क्योंकि तुम पैगम्बर मैसेन्जर हो। तो सभी को मैसेन्ज देना है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है और दूसरों को भी पैगाम देना है बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। भक्ति करते हैं सदगति को पाने। परन्तु उनको पता थोड़ेही पड़ता है। यह है ही पापात्माओं की दुनिया। सभी एक दो को पापात्मा कहते हैं। नम्बरवन पाप बाप कहते हैं मेरी निन्दा करते हैं। तब तो गायन है यदा2 ... बाप कहते हैं अब घर चलो। घर जाने लिये कितनी मेहनत करते हैं। स्वयं सन्यासी इन बातों को नहीं जानते। बाप आकर कहते हैं बच्चे चलो अब घर। बाप कहते हैं 84 के चक्र को याद करो तो चक्रवर्ती राजा बनेंगे। अच्छा बच्चों को गुडनाईट।